प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

तुम सैकड़ों लोगों द्वारा बनाए गए उस चित्र-संग्रह को एकटक क्यों देख रहे हो जिसके चित्रों के, रूपों के और आकारों के चुनाव से तुम्हारा कुछ लेना-देना नहीं है? उन लोगों के डिज़ाइनों का तुम्हारे इस अभूतपूर्व क्षण से कोई सम्बन्ध नहीं है जिसकी रचना के लिए तुमने इतनी दक्षता से और कुशाग्रता से काम किया है। तुम्हारे सामने जो चमचमाता प्रकाश है, उसके प्रति जागो और उससे जुड़ी ध्वनि का, उसके सुस्पष्ट सुर का अनुसरण करो।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।